आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 01 अंक : 01 बीकानेर : सितम्बर, 2013 मूल्य : 2 रूपये

कृषकों और पशुपालकों के हित में एक और नई शुरूआत

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति का संदेश

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय मई 2010 में अपनी स्थापना के बाद से ही राज्य के किसानों और पशुपालकों के प्रति अपने दायित्वों और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के लिए निरंतर प्रयासरत है। विज्ञान और तकनीकी के युग में निरंतर अनुसंधान और शोध का असर पालतू पशुओं के रखरखाव पर पड़ना लाजमी है। पशुपालकों में भी नई तकनीकों का उपयोग होने लगा है। हमारे देश में पारंपरिक और देशी पशुपालन पद्धति के साथ – साथ किसानों और पशुपालकों को नई तकनीकी ज्ञान भी जरूरी है। भौगोलिक दृष्टि से विशाल राज्य के पशुपालक – कृषकों तक अपनी पहुँच बनाने के लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय का पहला कृषि अनुसंधान केन्द्र नोहर में शुरू हो गया है। विश्वविद्यालय ने पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर परिसर में और वल्लभनगर (उदयपुर) के दक्षिणी परिसर में पशुओं के चिकित्सा और उपचार के बहुउद्देशीय क्लिनिकल कॉम्पलेक्स को आधुनिकतम रूप दिया है। महामहिम राज्यपाल महोदया ने हाल ही में राज्य के जनजातिय उपयोजना क्षेत्र के 5 जिलों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तैयार बहुउद्देशीय एम्बूलेंस सेवा का शुभारंभ कर दिया है।

इस एम्बूलेंस में पशुओं के रोग निदान, उपचार और छोटे पशुओं के लिए शल्य चिकित्सा की सभी सुविधाएँ हैं। बड़े बीमार पशुओं को क्लिनिकल कॉम्पलेक्स तक परिवहन की सुविधा भी है। यहां डेयरी, मुर्गी, मछली, एवं एमु पालन के अलावा हरा चारा – घास उत्पादन, पोषणयुक्त फीड ब्लॉक का कार्य भी बड़े पैमाने पर किया जाकर पशुपालकों को प्रेरित किया जा रहा है। विश्वविद्यालय शीघ्र ही राज्य के 26 जिलों में ''वेटरनरी यूनिर्वसिटी ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च सेण्टर'' शुरू करेगा। ऐसे 10 केन्द्रों की स्वीकृति मिल चुकी है।

राज्यपाल श्रीमती मारग्रेट अल्वा राजभवन से पशु ऐम्बुलैंस को उदयपुर के जनजातीय उप क्षेत्रों के लिए रवाना करते हुए

अगले 2 वर्षो मे सभी केन्द्र खोलकर राज्य के हर जिले में वेटरनरी विश्वविद्यालय अपनी पहुँच बना लेगा। राज्य के करीब 65 लाख परिवार पशुपालन से आय प्राप्त करते है। राज्य की सकल घरेलू आय में पशुपालन का योगदान (लगभग 11 से 13 प्रतिशत तक) समग्र कृषि से होने वाली सकल घरेलू आय के आधे से भी अधिक होता है। पशुपालन क्षेत्र में लगभग 90 प्रतिशत श्रम महिलाओं का है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, पशुपालक और कृषकों तक अपनी पहुँच के लिए सूचना प्रौद्योगिकी सहित रेडियो, टी. वी प्रसारण और मुद्रित सामग्री का उपयोग कर रहा है। हाल ही में महामहिम राज्यपाल महोदया ने किसान एस. एम. एस सलाहकारी सेवाओं का शुभारंभ भी कर दिया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय देश के चुनिंदा संस्थानों में शामिल हो गया जहां से पशुपालक – कृषकों को पशुधन संपदा के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, उत्पादन – वृद्धि और अन्य उपयोगी तकनीकी जानकारी सीधे मोबाइल सैट पर उपलब्ध करवाई जा रही है। विश्वविद्यालय के सम्बद्ध वेटरनरी कॉलेज बीकानेर द्वारा अप्रेल 2004 से माह में होने वाले पशुओं में मौसमी रोगों की भविष्यवाणी और उनके उपचार का बुलेटिन जारी किया जा रहा है। यह सेवा एस. एम. एस से भी उपलब्ध होगी। निकट भविष्य में एस.एम.एस का व्यापक उपयोग पशुपालन से सम्बद्ध सभी विभागों, लोगों और शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए भी किया जाएगा। 'धीणेरी बांता' रेडियो कार्यक्रम हर एक गुरूवार सांयकाल 7:15 बजे से आकाशवाणी बीकानेर से प्रसारित किया जा रहा है जिसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय के शिक्षक वैज्ञानिक, पशुपालको के लिए उपयोगी वार्ता और जानकारी दे रहे हैं। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा मासिक हिन्दी न्यूज लैटर का नियमित प्रकाशन राज्य के कृषकों और पशुपालकों के व्यापक हित में लिया गया निर्णय है। सरल और कृषकों के लिए बोध गम्य भाषा में प्रकाशित मासिक पत्र सम्प्रेषण और शिक्षण – प्रशिक्षण के लिए मील का पत्थर साबित होगा, ऐसी मेरी मान्यता है।

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारम् ।।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

राज्य के पहले और देश के नौवें राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजुवास) की स्थापना 13 मई 2010 को बीकानेर में की गई। 200 एकड़ से अधिक भूमि में स्थित विश्वविद्यालय रियासतकालीन ऐतिहासिक और स्थापत्य कला के बेजोड प्रिंस बिजेय भवन पैलेस में शुरू हुआ। आजादी के बाद राज्य का पहला पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय भी 1954 मे यहीं शुरू किया गया था, जो अब विश्वविद्यालय का संगठक महाविद्यालय है। वर्तमान भवन में लाल पत्थर पर नक्काशी, जाली–झरोखे नयनाभिराम शिल्प कला के बेजोड़ नमूने हैं। इसके साथ ही स्टेट म्यूजियम के लिए बने शार्दुल सदन और स्टेट लाइब्रेरी के समकालीन भवन भी इसमें शामिल है। बड़े बाग–बगीचे, फव्वारे और ऊँचे–ऊँचे वृक्षों से आच्छादित परिसर उपवन जैसी शीतलता प्रदान करता है। विश्वविद्यालय के शिक्षण, शोध व चिकित्सा सेवा के कार्य राज्य के लिए वरदान साबित हो रहे है। राज्य सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन के महत्वपूर्ण योगदान को बढ़ाने, विविध जलवायु में पशुओं के संरक्षण उनकी बेहतर नस्ल तैयार करने विशेषकर दुधारू पशुओं के गौवंश को बढ़ाने व ऊँट, भेड़, बकरी व अश्व तथा अन्य जीवों की सुरक्षा, चिकित्सा के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना कर इसके दायरे को और कार्यों को विस्तृत किया है। इसका लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अकाल की विभीषिका, कम वर्षा, अधिक गर्मी–सर्दी की विपरीत परिस्थितियों में बेहतर पशुपालन की वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी देने के लिए विश्वविद्यालय निरतंर कार्यशील है। देश और राज्य की पशु चिकित्सा जरूरतें पूरी करने के लिए विश्वविद्यालय वेटरनरी के 75 स्नातक, 74 स्नातकोत्तर और 37 वाचस्पति की उपाधियॉ प्रति वर्ष प्रदान कर एडवांस रिसर्च कार्य मे भी कुशल मानव संसाधन मुहैय्या करवा रहा है। गांव–ढाणी तक पशुपालन कार्यों के लिए पशुपालन का 2 वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम राज्य के विभिन्न जिलों में 62 संस्थानों के माध्यम से 3100 लोगों को प्रशिक्षण देकर मानव संसाधन उपलब्ध करवा रहा है।

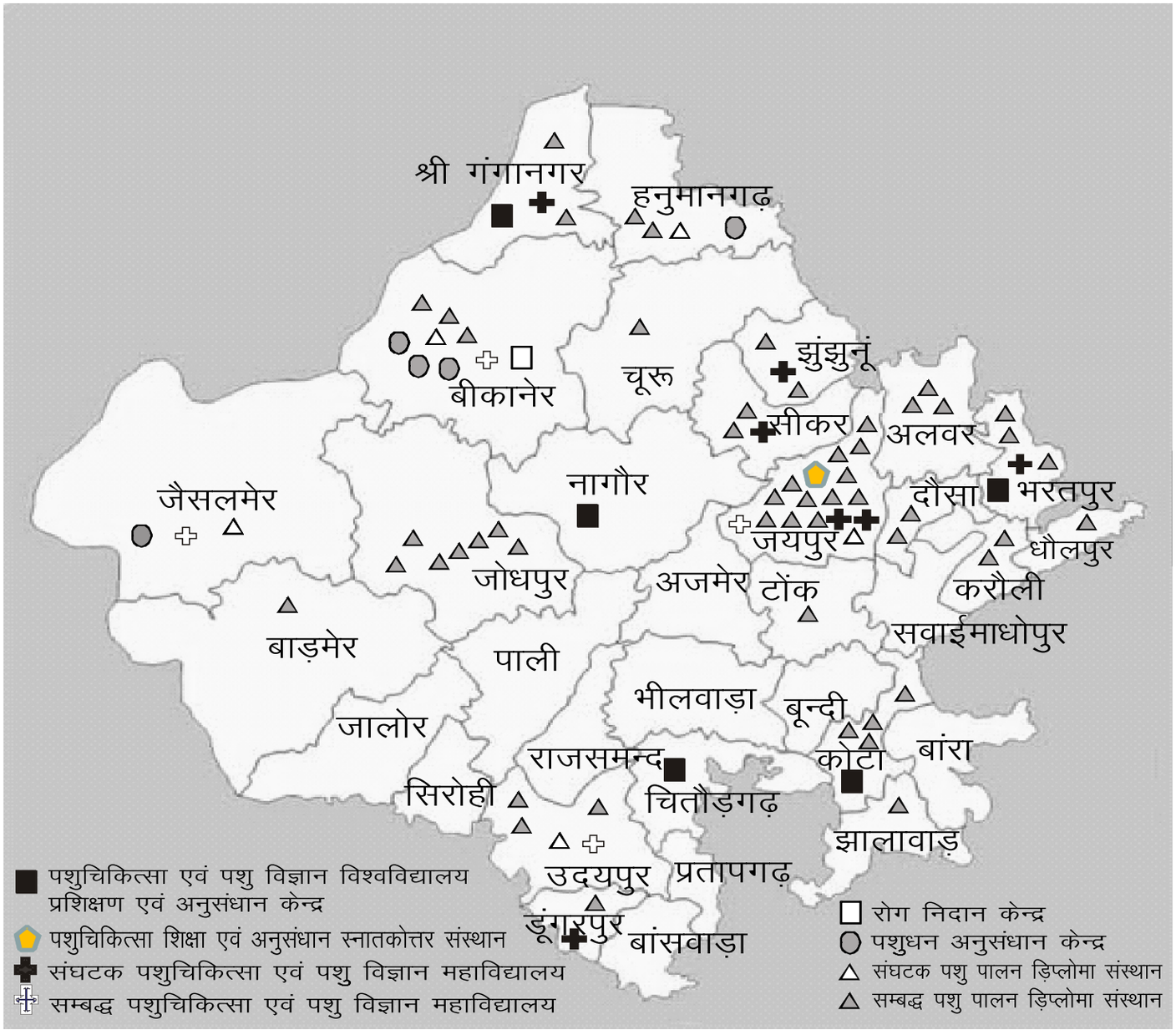

राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय – मानचित्र में

। आप हमें मानव संसाधन दें, हम आपको उन्नत तकनीक देंगे ।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में अत्याधुनिक पशु चिकित्सा सेवाऐं – सुलभ

सुदूर क्षेत्रों से उपचार के लिए आने वाले पशुओं की संख्या में बढ़ोतरी

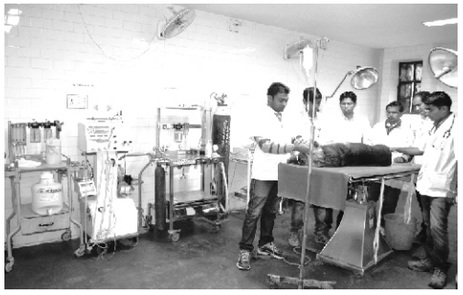

वेटरनरी कॉलेज बीकानेर का शल्य चिकित्सा कक्ष

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के सम्बद्ध पशु चिकित्सालय में शल्य चिकित्सा और रोग निदान की अत्याधुनिक सुविधाओं के कारण सुदूर क्षेत्रों से इलाज के लिए बड़ी संख्या में पशु लाए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि सम्बद्ध चिकित्सालय में बड़े व छोटे पशुओं के लिए विशेष ट्रेविस, हाइड्रोलिक लिफ्ट मशीनें, सोनोग्राफी की डॉप्लर मशीन, एण्डोस्कोपी, छोटे और बड़े पशुओं के ऑपरेशन थिएटर, वेंटिलेटर, क्रिटिकल केयर यूनिट के साथ ही पशुरोगों के निदान की सभी सुविधाएं मुहैय्या करवाने से बीमार पशुओं का त्वरित इलाज और पशुओं को राहत मिलने से बीकानेर संभाग के अलावा अन्य जिलों से भी पशु लाए जा रहे है। यहां उपलब्ध विषय विशेषज्ञ सेवाओं तथा आधुनिक तकनीक का लाभ आम पशुपालकों को मिल रहा है। निदेशक, क्लिनिक्स प्रो. टी.के. गहलोत ने बताया कि गत सप्ताह लकवा ग्रस्त एक श्वान को सरदारशहर से चिकित्सा के लिए लाया गया। विशेषज्ञ चिकित्सको ने एक्स–रे जाँच के बाद डाग कार्ट (पहिए की गाड़ी) लगाकर श्वान को चलते हुए रवाना किया। जोधपुर से एक जर्मन शैफर्ड नस्ल के श्वान जिसकी मोटर दुर्घटना में दोनों टांगे टूट गई थी को बीकानेर लाया गया। शल्य चिकित्सकों के दल ने इन्ट्रा मेडूलरी पिनिंग से ईलाज कर उसे वापिस भेजा। इसी प्रकार ब्रिगेडियर मोहित (जोधपुर) द्वारा लाए गये लेब्राडोर श्वान को भी चिकित्सकों ने शल्य क्रिया कर राहत पहुँचाई। गत पखवाडे लूणकरनसर तहसील के दो सांड पशु चिकित्सालय लाए गए जिनके पेशाब नली तथा पंखा (नीचे की चमड़ी) व्याधिग्रस्त हो गए थे का शल्य क्रिया से उपचार किया गया। सरदारशहर से खुजली ग्रसित ऊँट का निदान मेडिसिन क्लिनिक के विशेषज्ञों ने स्किन स्क्रेपिंग लेकर माइक्रोस्कोप द्वारा नवस्थापित निदान प्रयोगशाला में जांच के बाद पुख्ता इलाज किया। मादा एवं प्रसूति रोग के विभागाध्यक्ष प्रो. जी.एस. मेहता ने बताया कि गत पखवाड़े में छत्तरगढ़, विजयनगर, सांडवा, लूणकरणसर तथा नोखा तहसील के गाँवों से बड़ी संख्या में बच्चेदानी के टार्शन और डिस्टोकिया पीडित गाय और भैंसों को विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सालय में लाया गया। इन पशुओं का तुरन्त इलाज/ऑपरेशन कर राहत पहुँचाई गई। पशु चिकित्सालय के अधीक्षक प्रो. डी.के. बिहानी ने बताया कि विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सालय में 8 घंटे की तीन पारियों में कार्य किया जाकर चौबीसों घंटे पशु चिकित्सा सेवाऐं दी जा रही हैं। औषधी के विभागाध्यक्ष और श्वान विशेषज्ञ प्रो. अनिल आहुजा ने बताया कि पशु चिकित्साल में श्वानों के रोग निदान तथा चिकित्सा के लिए हम विश्व स्तरीय सुविधाएं जुटा रहे है। पशुओं की निरतरं बढती कीमतों के मध्यनजर आज का पशुपालक बहुत जागरूक हो गया है। यही कारण है कि पशुपालक अपने पशुओं का ईलाज करवाने के लिए राजुवास स्थित अत्याधुनिक पशु चिकित्सालय में लेकर आते है।

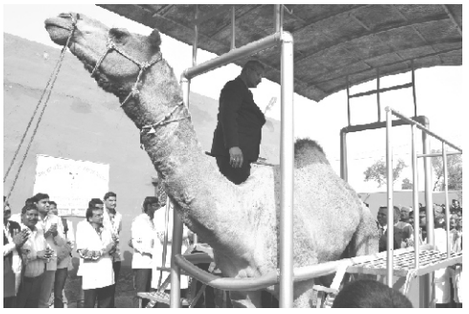

टी. वी. सी.सी. बीकानेर में ऊँट का ट्रेविस

पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान का महत्व

गाय एवं भैंस पालन में कृत्रिम गर्भाधान का बहुत अधिक महत्व है। हिमीकृत वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान की तकनीक लगभग एक शताब्दी से अधिक समय के लगातार उच्च शोध का परिणाम है। आज के समय में दूध की मांग लगातार बढ़ रही है जबकि गोचर लगातार कम हो रहा है, पशुओं का रखरखाव एवं लालन–पालन पर खर्च लगातार बढ़ रहा है। सघन पशु पालन से बीमारियां बढ़ रही है एवं उपचार महंगा होता जा रहा है। ऐसे में पशु की प्रजनन क्षमता का पूर्ण उपयोग करना बहुत जरूरी हो जाता है। पशुओं का समय पर न ब्याहना या बांझपन का बढ़ना डेयरी व्यवसाय को असफल कर सकता है। लम्बे समय तक सही प्रजनन क्षमता एवं उत्पादकता बनाये रखने के लिये गाय या भैंस का उचित समय पर गर्भधारण करवाना नितांत आवश्यक है। आने वाली नस्ल भी उच्च उत्पाद क्षमता वाली हो जिससे वह बदलते पर्यावरण एवं परिस्थितियों में उपयुक्त रह सके। इन सभी बातों के लिये पशु पालकों को कृत्रिम गर्भाधान तकनीक का भरपूर लाभ उठाना चाहिये और इसके बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिये। कृत्रिम गर्भाधान के बारे में निम्नलिखित जानकारी महत्वपूर्ण है –

- गायों की देशी उन्नत दुधारू नस्लों जैसे साहीवाल, गिर, थारपारकर, रेड सिंधी, राठी इत्यादि में केवल समान नस्ल के ही टीके लगाकर नस्ल सुधार करना चाहिये।
- विदेशी नस्ल जैसे जर्सी व हॉल्सटीन या संकर नस्ल के टीके केवल अविवरणीय या निम्न स्तर के आनुवांशिक नस्ल के पशुओं में ही लगाना चाहिये। देशी गायों में विदेशी नस्ल का अनुवांशिक स्तर 50 प्रतिशत तक ही रखना उपयुक्त रहता है।
- पशु पालक को कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र पर उपलब्ध नस्ल के टीको की एवं सही प्रजनन नीति की जानकारी होनी चाहिये और पशु पालक को नीति के अनुसार ही टीके की माँग करनी चाहिये।
- पशु को टीका सही समय पर लगवाना चाहिये। सामान्यतः गायों में कृत्रिम गर्भाधान का सही समय पशु के गर्मी (हीट) में आने के 12 से 17 घण्टे के बीच का होना चाहिये। जबकि भैंसो में यह समय गर्मी (हीट) आरंभ होने के 15 से 20 घण्टे के बीच का होना सही रहता है।

प्रो. (डॉ) जितेन्द्र सिंह मेहता, राजुवास

मिशन रेबीज में 6 हजार श्वानों का टीकाकरण

बीकानेर, । मिशन रेबीज के अर्न्तराष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत वेटरनरी विश्वविद्यालय के सहयोग से राजस्थान के बीकानेर शहर के 6 हजार श्वानों का एंटी रेबीज टीकाकरण सितम्बर में किया जाएगा। मिशन रेबीज कार्यक्रम में वर्ल्ड वेटरनरी सर्विसेज (यू.के.) संस्थान द्वारा भारत में 11 स्थानो पर 1 सितम्बर से 30 सितम्बर 2013 तक 50 हजार श्वानों का टीकाकरण किया जाएगा। राजस्थान प्रांत से एकमात्र बीकानेर जिले में टीकाकरण अभियान में 14 सितम्बर से 30 सितम्बर तक छः हजार श्वानों का टीकाकरण किया जाएगा। इस अभियान से रेबीज के फैलाव में बचाव होने से मनुष्य और कुत्तों की जान भी बचाई जा सकेगी। रेबीज जैसी जानलेवा बीमारी के 99 फीसदी मामले संक्रमित कुत्तों के काटने से होते है। इस बीमारी के लक्षण पाए जाने की स्थिति में मौत से बचना मुश्किल होता है। भारत देश में हर दूसरे सैकेण्ड में कुत्ता काटे जाने का मामला पाया गया है। एक अनुमान के मुताबिक एक दिन में 24 व्यक्ति रेबीज की बीमारी से मरते है। इसमें आधी संख्या बच्चों की होती है। पूरे विश्व में रेबीज से मरने वालों की एक तिहाई संख्या भारत से है। भारत जैसे देश में कुत्ता काटे जाने के बाद इलाज में लगभग 25 करोड़ डॉलर राशि एक साल में व्यय की जाती है। इसके बावजूद भी लोग बड़ी संख्या में रेबीज से मर जाते हैं।

बकरी पालन : आय का उत्तम स्त्रोत

बकरी पालन हमारे देश का बहुत प्राचीन व्यवसाय है, गरीब किसानों के लिए बकरी से बेहतर कोई दूसरा पशु नहीं है। छोटे एवं गरीब किसानों के लिए बकरी पालन काफी सरल व लाभदायक व्यवसाय है। बकरी के इन्हीं गुणों के कारण इसे गरीब की गाय कहा जाता है। राजस्थान की सभी प्रकार की वातावरणीय परिस्थितियों में भी बकरियों में उत्पादन करने की विलक्षण क्षमता होती है। बकरी पालन मुख्य रूप से दूध, मांस व रेशों के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त बकरी की मींगनी व मूत्र जैविक खाद के रूप में काम में आती है। दूध व मांस के अतिरिक्त बकरी का चमड़ा काफी महत्वपूर्ण है, जिससे जैकैट, कोट, बटुऐ, जूते, दस्ताने आदि निर्मित किये जाते है। भूमिहीन किसान बकरी पालन अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकते है। विश्व में कुल बकरी 861.9 मिलीयन है जिसमें से 514.4 मिलीयन एशिया में पायी जाती है।

बकरी की संख्या के विश्व परिदृश्य में चीन एवं भारत का क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय स्थान है। भारत में विश्व की 17 प्रतिशत बकरियां है अर्थात् लगभग 125.7 मिलीयन की संख्या में है। चलते फिरते रेफ्रिजरेटर उपनाम से मशहूर बकरी की कुल 24 नस्लें पंजीकृत है जिनमें से मारवाड़ी, सिरोही, जखराना नस्लें राजस्थान में पाई जाती है। इसके अलावा राजस्थान में कुछ स्थानीय नस्लें भी है, जो की पंजीकृत नहीं है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ 2008) के आंकड़ों के अनुसार बकरी का दुग्ध उत्पादन 4 मिलियन मैट्रिक टन है जो कि विश्व में सर्वाधिक है। भारत में 0.48 मिलियन मैट्रिक टन मांस उत्पादन बकरियों से होता है। राजस्थान (22 मिलीयन) पश्चिम बंगाल के बाद कुल बकरी संख्या में दूसरे स्थान पर है। राजस्थान में बाड़मेर जिले में सर्वाधिक (10.32 प्रतिशत) बकरियां है। इसके बाद जैसलमेर जिले में 5.26 प्रतिशत है।

मारवाड़ी नस्ल की बकरी

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित अखिल भारतीय समन्वित बकरी परियोजना के अन्तर्गत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग में मारवाड़ी नस्ल की बकरियों के उन्नयन की एवं वल्लभनगर (उदयपुर) में सिरोही नस्ल के उन्नयन की परियोजना चल रही है। इसके अलावा विश्व बैंक के सहयोग से विश्वविद्यालय में राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धा परियोजना के तहत मारवाड़ी तथा सिरोही नस्ल की बकरियों के उन्नयन की दो परियोजनायें स्वीकृति की गयी है। हाल ही में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा पंजाब प्रांत के 20 पशु चिकित्सकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 2 जुलाई से 6 जुलाई, 2013 तक सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण पंजाब वेटेरीनरी कांउसिल के आग्रह पर किया गया। **डॉ. हेतुदान देथा,** राजुवास

वर्षा ऋतु में पशुओं की सार - सम्भाल कैसे करें

मुर्रा भैंस

हर मौसम का जीव जगत पर अलग प्रभाव पड़ता है। पशु भी मौसम के प्रभाव से अछूते नहीं रहते। जब भी मौसम में बदलाव आता है तो पशुओं पर इसका अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पशु के शरीर पर मौसम के प्रतिकूल प्रभाव से दबाव बढ़ जाता है। जिससे पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता व अन्य क्रियाएं (मुख्यतः प्रजनन एवं स्वास्थ्य संबंधी) कमजोर पड़ जाती हैं।

बदलते मौसम में पशुओं का मौसम के अनुसार प्रबंधन करना बहुत जरूरी है ताकि पशु शरीर की ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाने व पशु को स्वस्थ रखने में उपयोग हो सके। पशुओं पर गर्मी–सर्दी की तरह बरसात के मौसम का भी प्रभाव पड़ता है। पानी तथा नमी की अधिकता हो जाने के कारण बरसात का मौसम पशुओं के स्वास्थ्य व उत्पादन को काफी प्रभावित करता है। इसलिए वर्षाकाल में खासकर दुधारू पशुओं की विशेष संभाल जरूरी है ताकि पशु को स्वस्थ रखकर उससे पूरे ब्यांत में (लगभग 300 दिन) दूध प्राप्त किया जा सके और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाकर प्रति वर्ष एक बच्चा प्राप्त किया जा सके।

बरसात होने के बाद पशुओं के लिए हरा चारा काफी मात्रा में उपलब्ध हो जाता है। जो पशुओं को प्रोटीन, खनिज तत्व और विटामिन प्रदान करता है। यह पशु को स्वस्थ रखने व दूध उत्पादन और प्रजनन क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण होता है। बरसात के मौसम में पशुओं के लिए हरे चारे की सुविधा होने के साथ ही अनेक तरह की समस्याएं भी उत्पन्न हो जाती हैं, इसलिए पशुपालकों को बरसात के मौसम में पशुओं की खास संभाल के साथ सावधानियां बरतने की आवश्यकता होती है। बछड़ियों में गर्मी (हीट) का समय वयस्क गायों की अपेक्षा कम रहता है इसलिये कृत्रिम गर्भाधान का सही समय हीट में आने के 8 से 10 घण्टे का उपयुक्त होता है।

कृत्रिम गर्भाधान का सही समय आती हीट के बजाय जाती हीट से पूर्व उपयुक्त माना जाता है। गर्भ का टीका केवल उन्हीं पशुओं में लगवाना चाहिये जिनमें हीट के समय में योनी द्वार से गिरने वाला चिपचिपा पदार्थ (झेरा या उनबने) काँच की तरह साफ एवं लिसलिसेदार हो। गायों एवं भैंसो में एक हीट से दूसरी (अगली) हीट का अन्तराल लगभग 21 दिन का होना चाहिये। अगर झेरा सही नहीं हो या हीट का अन्तराल सही नहीं हो तो ऐसे पशुओं के गर्भ ठहरने की संभावना बहुत कम रहती है। अतः इन पशुओं को पशु चिकित्सक द्वारा जांच करा कर पहले इलाज करवाना चाहिये। पूर्णतया स्वस्थ होने के पश्चात् ही गर्भाधान करवाना चाहिये। पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान सबंधित एवं अन्य पूर्ण विवरण जैसे हीट में आने की तिथि, गर्भाधान की तिथि, टीके का विवरण, सांड़ के बारे में जानकारी आदि महत्वपूर्ण बातें लिखकर रखना चाहिये।

राठी नस्ल गाय का बछड़ा

कृत्रिम गर्भाधान का टीका लगवाने के 30 से 45 दिनों के बाद गर्भ परीक्षण जरूर करवाना चाहिये। इसके पश्चात् हो सके तो ब्याहने से पूर्व भी एक बार गर्भ का परीक्षण करवाना चाहिये। ब्याहने के पश्चात पैदा हुऐ बछड़े / बछड़ी या पाड़ा / पाड़ी का विवरण कृत्रिम गर्भाधान संस्थान में जाकर लिखवा देना चाहिये (जहां पर टीका लगवाया था)। यह जानकारी चयनित सांड़ो के मूल्यांकन के लिये एवं भविष्य की प्रजनन कार्य प्रणाली के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। .....शेष पृष्ठ 5 पर .....

पृष्ठ 4 का शेष .....

बरसात के मौसम में पशुओं के लिए बनाया गया संतुलित आहार व अन्य आहार को नमी के प्रभाव से बचाने के लिए जमीन से एक फुट ऊंचा तथा दीवार से डेढ़ फुट दूर सुरक्षित भंडारण करके रखना चाहिए। ऐसा न करने पर पशु चारे व संतुलित आहार में नमी के कारण फफूंद लग जाती है जो पशु के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। इस मौसम में फली वाले हरे चारे (पशु शरीर के वजन का दो से तीन प्रतिशत) मिलाकर हर वर्ग के पशुओं को खिलाना बहुत जरूरी है ताकि पशुओं को आफरा व कब्जी से बचाया जा सकें। आफरा से बचाने के लिए बड़े पशु को 60 ग्राम तारपिन व 500 से 750 ग्राम सरसों का तेल मिलाकर पांच से सात दिन में एक बार जरूर पिलाना चाहिए। कब्ज से बचाने के लिए 500 से 700 मिलीलीटर सरसों के तेल के साथ 60 से 70 ग्राम मीठा सोडा या 500 से 1000 मिलीलीटर पैराफीन द्रव्य पिलाना चाहिए। अन्य वर्ग के पशुओं को इसकी मात्रा पशु विशेषज्ञ की सलाह से पिलानी चाहिए। बाढ़ व सूखे या अन्य प्राकृतिक आपदा की स्थिति में प्रायः चारा मिलने, खेत से काटने की, चारा पहुंचाने एवं रखने की समस्या पैदा हो जाती है। ऐसी समस्या से निपटने के लिए हरे चारे विशेष तौर से बरसात के मौसम में दो–तीन दिन आगे तक रखने चाहिएं तथा हरा चारा खेत से आने के एक दिन बाद काटकर पशुओं को खिलाएं ताकि बरसात के मौसम में चारे के अंदर आई नमी की अधिकता कम हो जाए। सूखे चारे को सुरक्षित स्थान पर अच्छी तरह भंडारण करके रखने चाहिए। सामान्य संतुलित पशु आहार बनाने के लिए 60 किलोग्राम गेहूं का भूसा 19 किलोग्राम खल, पांच किलोग्राम तेल रहित धान के छिलके, एक किलोग्राम यूरिया, 10 किलोग्राम शीरा, एक किलोग्राम साधारण नमक, दो किलोग्राम कैल्शियम ऑक्साइड और 23 ग्राम विटामिन मिश्रण (कुल 100 किलोग्राम पदार्थ) तैयार किया जा सकता है। पशुओं में दूध की बढोत्तरी, उनके शारीरिक विकास व प्रजनन क्रिया को सुचारू रूप से चलाने में यह चारा काफी सहायक सिद्ध होता है। यदि लंबे समय तक वर्षा न हो और हरा चारा विशेष तौर से ज्वार के खेत में पानी न लगा हो तो इस प्रकार के ज्वार के चारे को कम से कम एक सप्ताह बाद खिलाना चाहिए क्योंकि ज्वार के चारे में हाइड्रोसायनिक तेजाब की मात्रा बढ़ जाती है जो पशुओं के लिए जानलेवा हो सकती है। इस मौसम में पशुओं को मच्छर – मक्खियों से बचाने के लिए पशुओं के ऊपर मच्छरदानी लगाएं तथा अन्य परजीवियों से बचाव के लिए दो मिलीलीटर ब्युटोक्स दवा को एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। पशुपालकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु दवा लगे शरीर को चाटने न पाए। क्योंकि यह दवा बहुत जहरीली होती है। पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा अवश्य करवाना चाहिए। इस मौसम में भैंसों का ब्यांत भी शुरू हो जाता हैं तथा ब्याहने के कम से कम 15 दिन पहले उस पशु को कब्ज/दस्त आदि नहीं होने चाहिए। इसके लिए पशुपालकों को पशुओं के खान – पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा समस्या होने पर पशु विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए। गाय या भैंस के ब्याहने पर नवजात पशु को आधे घंटे से एक घंटे के अदंर खीस जरूर पिलाना चाहिए। बाद में 24 घंटों में दो – तीन बार खीस पिलाएं। कई बार मादा पशु, नवजात पशु को खीस पिलाने में असमर्थ होती है, ऐसी स्थिति में 30 मिलीलीटर अरंडी का तेल दो अंडों के द्रव के साथ मिलाकर नवजात पशु को पिलाना चाहिए। बरसात के मौसम में पशुओं को बासी व गंदा चारा नहीं खिलाना चाहिए तथा न ही उनको गंदा पानी पिलाना चाहिए क्योंकि इससे पशुओं को बदहजमी तो होती ही है, उनके पेट में कीड़े भी हो जाते हैं जो पशु बढ़वार, दुग्ध उत्पादन व उनके गर्भ पर दुष्प्रभाव डालते हैं। पशुपालकों को बरसात के मौसम से पहले ही पशुओं को मुंह – खुरपका व गलघोटू रोग से बचाने के लिए टीके लगवा लेने चाहिए। इस मौसम में पशुओं के खुरों की नियमित जांच करते रहना चाहिए तथा पांच से सात दिन में लाल दवाई को स्वच्छ गुनगुने पानी में मिलाकर पशुओं के खुरों को साफ करना चाहिए। नवजात बछड़ों व बछड़ियों के पेट मे अंतः परजीवियों को मारने के लिए 21 दिन के अंतराल पर तीन महिने की उम्र पर दवाई जरूर पिलानी चाहिए तथा हर बार दवाई बदली हुई होनी चाहिए। बच्चे को दवा पिलाने के बाद पांच से पन्द्रह मिलीलीटर सरसों का तेल जरूर पिलाना चाहिए। इस प्रकार पशुपालक बरसात के मौसम में अपने पशुओं की खास संभाल करके उनका बेहतर स्वास्थ्य और उनसे अधिक दूध उत्पादन प्राप्त कर सकता है।

– प्रो. सी. के. मुरड़िया
राजुवास

राज्य के पहले पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र के भवन का उद्घाटन

वेटरनरी इमरजेन्सी रेस्क्यू इकाईयां (वेरू) का गठन किया जाएगा

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने राज्य के पहले पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के नवनिर्मित भवन का विधिवत उद्घाटन किया। वेटरनरी महाविद्यालय के सर्जरी और रेडियोलॉजी विभाग के प्रथम तल पर निर्मित केन्द्र का भवन राजस्थान सरकार द्वारा राज्य योजना मद में मंजूर राशि से बनवाया गया है। बिहार वेटरनरी कॉलेज के बाद बीकानेर में प्रदेश का पहला तथा देश का दूसरा पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र है। पशुधन बाढ़, अतिवृष्टि, तापघात के साथ अन्य आपदाओं से ग्रसित होता है। अतः प्राकृतिक आपदाओं से इनके बचाव और संवर्द्धन के लिए यह केन्द्र अपनी विशिष्ट भूमिका अदा करेगा। सूखा, तेज गर्मी और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पशुधन को बचाने के लिए तकनीक विकसित करने के अलावा आपदा प्रबंधन कार्यों के लिए प्रशिक्षित स्वंयसेवकों को भी तैयार किया जाएगा। विश्वविद्यालय में स्थापित केन्द्र आपदाओं से बचाव की उन्नत तकनीक और विधियों के विकास में अपना योगदान देगा। विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) केन्द्रों पर वेटरनरी इमरजेन्सी रेस्क्यू इकाईयों (वेरू) का गठन किया जाएगा। ये इकाईयां प्राकृतिक आपदाओं से पशुओं की रक्षा के लिए स्वंयसेवक के रूप में मानव संसाधन तैयार करेगीं। पूरे राज्य के पशु चिकित्सकों और पैरावेट को प्रशिक्षित किया जाएगा। केन्द्र लघु व मध्यम अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा। सरकार द्वारा विश्वविद्यालय में स्थापित ऐसे केन्द्रो को अपने कार्य और परिणाम के आधार पर स्थाई प्लान में शामिल किया जा सकेगा। प्रो. गहलोत ने बताया कि सिविल कार्यों की गुणवत्ता जांच की प्रयोगशाला की विश्वविद्यालय में स्थापना के सुखद परिणाम के रूप में पशु आपदा प्रबंधन तकनीक का एक शानदार भवन तैयार हुआ है।

पशुओं को गर्मी से कैसे बचाऐं –

- पशुओं को छाया में बाँधें।
- लू तथा गर्म हवा आने की दिशा में विशेष रूप से रूकावट खड़ी करें।
- पशु घर की ऊँचाई ज्यादा हो व इसमें पँखे तथा कूलर हों।
- पशुओं को पानी से दो बार नहलायें।
- पशुओं में विटामिन – ए के टीके लगवायें।
- पशु घर के ऊपर तथा साईड में हरी बेलों को लगवाऐं।
- पशुओं को प्रचुर मात्रा में ठण्डा पानी तथा छाया उपलब्ध करवायें।
- पशुओं के जल पिलाने के केन्द्र पशुओं की संख्या के अनुरूप हो।
- पशुओं को पानी पिलाने की खोली अथवा बर्तन जमीन पर मजबूती से लगा हो ताकि पशु उसे उलट नहीं सकें।

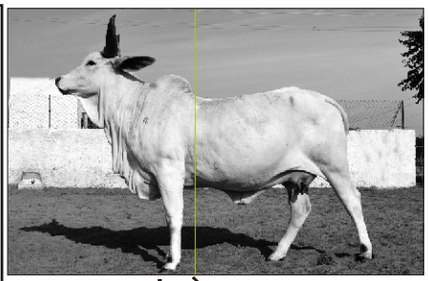

कांकरेज गाय

जल ही जीवन है।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

मारवाड़ी भेड़ों मे वृद्धि गुणों के लिये प्रजनक (मेढ़ों) के मूल्यांकन के तरीकों का अध्ययन

अन्वेषण के लिये मारवाड़ी भेड़ों के आंकड़े केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान (CSWRI) बीकानेर से लिये गये। इस शोध में मारवाड़ी भेड़ के जीवन के विभिन्न स्तर पर शारीरिक भार एव औसत दैनिक वृद्धि का विश्लेषण करके प्रजनक (मेढ़ों) के मूल्यांकन की उच्च तथा नवीन तकनीकों का उपयोग कर उच्चतम गुणों वाले मेढ़ों का चयन किया गया। ये मेंढ़ें शारीरिक भार एवं औसत दैनिक वृद्धि के लक्षणों के लिये आनुवांशिक रूप से अधिक दक्ष पाए गए। इन मेढ़ों एवं इनसे उत्पन्न संतानों के उपयोग से पशुपालक अपने रेवड़ में नस्ल सुधार कर ऊन एवं मांस के उत्पादन में बढ़ोत्तरी कर सकता है।

शोधकर्ता – डॉ. हरविन्दर सिंह

ऊँट के दुग्ध जीन्स के प्रमोटर क्षेत्रों की जीनोमिक संरचना

आधुनिक समय मे ऊँट का उपयोग सीमित हो जाने से किसानों ने इसके पालन से मुँह मोड़ लिया है। परन्तु आधुनिक शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि ऊँट के दूध में जीवाणु एवं विषाणुरोधी गुण होते है जिसका उपयोग कैंसर, मधुमेह, काला – अजार, पीलिया, ड्रोप्सी, अस्थमा, टी. बी, लीशमानियोसिस के इलाज में किया जाता है। उंटनी के दूध में कुछ ऐसी प्रोटीन उपस्थित होती हैं जो गाय, के दूध में नहीं होती हैं। इस दूध का उपयोग उन बच्चों के लिए किया जा सकता है जो गाय या भैंस के दूध के लिये संवेदनशील होते है। इस दूध में विटामिन "C" उपस्थित होता है। इस शोध में उंटनी के दूध में उपस्थित उन जीन का पता लगाया गया जो कि मधुमेह तथा अन्य चिकित्सीय उपयोगी प्रोटीन का निर्माण करते हैं। आने वाले समय मे इन जीन का उपयोग कर रोगों के इलाज में उपयोगी प्रोटीन युक्त दूध का उत्पादन गाय/भैंस/भेड़/बकरी में करने के प्रयास किये जा सकेंगे।

शोधकर्ता – डॉ. हेतुदान देथा

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-सितम्बर 2013

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँह खुरपका रोग (FMD)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्री गंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, अनूपगढ़, धौलपुर, सवाई माधोपुर, अलवर
गलघोंटू (H.S.) (Haemorrhagic septicemia)	भैस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टोंक, बून्दी, राजसमन्द,,पाली, सीकर, श्रीगंगानगर
ठपपा रोग (B. Q.)	भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, बीकानेर
पी.पी.आर. (P.P.R.)	बकरी	सवाई माधोपुर, बीकानेर
चेचक (Pox)	बकरी	जयपुर, श्री गंगानगर, बीकानेर
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भैड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ
सर्रा (Trypanosomosis)	ऊँट, भैंस	अनूपगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, बीकानेर
फड़किया (E.T.)	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर
रक्त प्रोटोजोआ (Theileriosis, Babesiosis)	भैंस, गाय	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर, श्री गंगानगर, जयपुर
गोल–कृमि (Round Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर, सवाई माधोपुर
फीता–कृमि (Tape Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर, कोटा
पर्ण–कृमि (Trematodes)	ऊँट, भैंस, गाय, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, अनूपगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली (Mange)	ऊँट	समूचे राजस्थान में

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडियासिस (खूनी दस्त) गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

मुख्य समाचार

घायल मोर और श्वान को उपचार मिला

बीकानेर। वेटरनरी कॉलेज पशु चिकित्सालय में गांव गिरीराजसर (कोलायत) के पशु प्रेमी पप्पू द्वारा घायल मोर को उपचार के लिये लाया गया जिसकी साथी मोर से लड़ाई में गर्दन के मध्य हिस्से की हड्डी टूटने से गर्दन एक ओर लटक गई थी। बेहोशी की अवस्था में मोर का तुरंत एक्स–रे लिया गया। गर्दन की हड्डी में फैक्चर पाया गया । शल्य चिकित्सकों डा0 कपिल कच्छवाहा तथा डा0 अजय सिंह ने विभागाध्यक्ष डा0 टी. के. गहलोत एवं डॉ. एस.एम. कुरेशी के मार्गदर्शन में सपोर्टिन्ग बेन्डेज द्वारा गर्दन की टूटी हड्डी को सेट किया। मोर की स्थिति काफी बेहतर हो गई। पशु चिकित्सालय में बीकानेर शहर का एक जर्मन शेफर्ड श्वान ट्रक के नीचे आ जाने से बुरी तरह घायल होगया। श्वान मालिक रात्रि 12 बजे इसे अस्पताल लेकर पहुँचे। पशुचिकित्सकों द्वारा चार घंटे शल्य क्रिया से उपचार करने से उसकी जान बच गई।

भारत–अफ्रीका कृषि सहभागिता में वेटरनरी विश्वविद्यालय बनेगा तकनीकी सहयोगी

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय को भारत–अफ्रीका सहभागिता के अर्न्तगत पशुपालन के क्षेत्र में तकनीकी पाटर्नर के रूप में सहभागी बनाने का आग्रह किया गया है। भारत सरकार द्वारा कृषि व पशुपालन के क्षेत्र में विशेषज्ञ सेवाएं अफ्रीकी देशों को प्रदान की जाएगी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अन्तर्राष्ट्रीय संस्था–एक्रिसेट एवं अन्तर्राष्ट्रीय कृषि परामर्शी समूह द्वारा गत 24 जून को नई दिल्ली में आयोजित गोलमेज सम्मेलन में यह निष्कर्ष निकला है। भारत–अफ्रीका सहभागिता के तहत कृषि व पशुपालन के क्षेत्र में अन्न उत्पादन खाद्य श्रृंखला, व्यवसाय सम्बन्ध तथा उद्यमिता सम्बन्धी विशेषज्ञ सेवाएं भारत द्वारा अफ्रीकी देशों को प्रदान की जाएगी जिससे अफ्रीकी देशों में कृषि व पशुपालन के हालात को सुधारा जा सके तथा इसमें स्थिरता लायी जा सके।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गहलोत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की नीति-निर्धारण कमेटी में शामिल

बीकानेर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. एस. अय्यपन ने राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को देश के विश्वविद्यालयों एवं अधीनस्थ संस्थानों के प्रशासनिक, कार्मिक और वित्तीय संबंधी नीतियों के लिए अधिस्वीकरण बोर्ड की सेक्टोरल कमेटी का सदस्य बनाया है। नौ सदस्यीय सेक्टोरल कमेटी में देश के समस्त कृषि और वेटरनरी विश्वविद्यालय में से एक मात्र कार्यरत कुलपति के रूप में प्रो. गहलोत को सदस्य के रूप मे शामिल किया गया है। राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के अल्पकाल मे ही ई–गर्वनेन्स उपायों को तेजी से लागू करके वित्तीय और मानव संसाधन जुटाकर विश्वविद्यालय को एक मजबूत आधार प्रदान करने में उल्लेखनीय सफलता पाई है। इसको पूरे देश में सराहा गया है। राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा स्थापना के पहले ही वर्ष में प्रशासनिक दक्षता के लिए इन्सेन्टिव पुरस्कार प्रदान किया गया। सेक्टोरल समिति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सभी विश्वविद्यालय और संस्थानों के लिए प्रशासनिक सुधार के लिए दिशा निर्देश तैयार करेगी। समिति को वित्तीय और कार्मिक नीति के लिए मापदण्डों का निर्धारण करने के साथ ही मानव संसाधन की उपलब्धता और फीस निर्धारण के लिए भी दिशा–निर्देश तैयार कर सुझाव देने को कहा गया है। कमेटी छात्र संबंधी मामलों की नीति का प्रारूप भी तैयार करेगी। इसके अलावा बोर्ड द्वारा सुझाये गए मामलों में भी अपनी राय प्रस्तुत करेगी।

एमिटी विश्वविद्यालय के साथ एम.ओ.यू.

बीकानेर। एमिटी विश्वविद्यालय के वायरोलाजी और इम्यूनोलोजी संस्थान ने वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के साथ पशु विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान कार्यों में आपसी सहयोग के लिए कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को एम.ओ.यू. का प्रस्ताव भेजा हैं। उत्तरप्रदेश नोयडा के ख्यातनाम संस्थान एमिटी विश्वविद्यालय विषाणु विज्ञान और इम्यूनॉलोजी में अग्रणी हैं और इन विषयों में स्नातकोत्तर और पी.एच.ड़ी पाठ्यक्रमों का संचालन भी करते हैं। वर्तमान में यह संस्थान देश–विदेश के नामी संस्थानो एवं विश्वविद्यालयो के साथ मिलकर कार्य कर रहा हैं।

आई.सी.ए.आर. से 2 करोड़ रूपये की वित्तीय स्वीकृती मिली

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कार्यों के सुदढ़ीकरण पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने दो करोड़ रूपये की राशि की प्रथम किश्त जारी की है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने इस विश्वविद्यालय में वेटरनरी शिक्षा के सुदढ़ीकरण और कृषि विकास की परियोजना के तहत यह वित्तीय राशि स्वीकृत की है। चालू वित्तीय वर्ष के लिए यह पहली किश्त हैं। प्रो. गहलोत ने बताया कि इस स्वीकृति का उपयोग अध्यापन के काम आने वाली सुविधाओं के आधुनिकीकरण तथा स्नात्तक व स्नात्तकोतर शिक्षा के सुदढ़ीकरण कार्यों पर किया जाएगा। यह राशि प्रायोगिक और गुणवतापूर्ण शिक्षण सामग्री के निर्माण, उपकरणों की सार संभाल, संकायों के चहुँमुखी विकास कार्यों और विद्यार्थियों के लिए प्लेसमेन्ट व काउन्सलिंग विस्तार के कार्यों पर व्यय की जाएगी।

अत्याधुनिक टच स्क्रीन मशीन द्वारा छोटे व बड़े पशुओं का रोग निदान

पशु क्रिटीकल यूनिट में अल्ट्रा सोनोग्राफी डॉप्लर मशीन शरू

बीकानेर । वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विश्वविद्यालय के सम्बद्ध पशु चिकित्सालय में पशुओं के रोग निदान की अत्याधुनिक और राज्य की पहली सोनिक्स टेबलेट–अल्ट्रा सोनोग्राफी डॉप्लर मशीन का उद्घाटन किया। विदेश से आयातित इस आधुनिक उपकरण से पशु चिकित्सालय की क्रिटिकल केयर यूनिट में रोगों की जटिलताओं का शीध्र पता लगाकर ईलाज शुरू हो सकेगा। अल्ट्रा सोनिक्स डॉप्लर मशीन राजस्थान में टच स्क्रीन टेक्नोलॉजी की पहली मशीन हैं। पशुओं की क्रिटिकल केयर यूनिट को एक्स–रे, सोनोग्राफी सहित अन्य जीवन रक्षक उपकरणों से लैस किया गया हैं। इस मशीन के आने से इमेजिंग डायग्नोसिस सेक्शन मजबूत हो गया हैं। इस मशीन से पशु रोग के अनुसंधान कार्यों को भी गति मिलेगी। इस अत्याधुनिक मशीन का उपयोग वेटरनरी छात्रों और चिकित्सकों को प्रशिक्षण जैसे कार्यों में भी किया जा सकेगा। विश्वविद्यालय के नवानियां स्थित वेटरनरी कॉलेज में भी यह मशीन शीघ्र ही स्थापित की जाएगी।

आई.सी.ए.आर. ने वेटरनरी विश्वविद्यालय लाइब्रेरी के सुदृढीकरण के लिए जारी की 75 लाख की ग्रांट

बीकानेर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के सुदृढ़ीकरण कार्यों के लिए 75 लाख रूपये राशि मंजूर की है। इस ग्रांट का उपयोग वर्ष 2013–14 में किया जाएगा। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि इससे पुस्तकालय में सूचना एवं संचार तकनीक को विकसित किया जा सकेगा। इससे ई–सेवाओं को और अधिक सुदढ़ बनाने के लिए ई–बुक्स और ई–जर्नल्स की खरीद की जाएगी। शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तकें और संदर्भ पुस्तकों की खरीद के लिए विभिन्न प्रकाशन समूहों को बुलाकर पुस्तक मेलों का आयोजन किया जाना भी प्रस्तावित है। कुलपति ने बताया कि इस राशि का उपयोग स्नातकोत्तर वेटरनरी शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर तथा वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर) में भी पुस्तकालय सेवाओं के लिए किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली की राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना के अर्न्तगत राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर को "ई–ग्रन्थ" योजना में डिजीटल लाईब्रेरी का सुदढ़ीकरण एवं सूचना प्रबंधन में शामिल कर लिया है। इस योजना में देश के 27 संस्थानों में से एक राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय को भी शामिल किया गया है।

सफलता की कहानी

स्वरोजगार से आय का जरिया बनाया पैरावेट देवीलाल ने

अच्छी तनख्वाह वाली सरकारी नौकरी हो ऐसा हर युवक का सपना होता है लेकिन बढ़ती बेरोजगारी के बीच यह किसी चुनौती से कम भी नहीं है। किस तरह से पेरावेट अर्थात् लघु–पशुचिकित्सा डिप्लोमाधारी स्वरोजगार का माध्यम बना एक युवक अपनी जिंदगी को नए आयाम तक पहुँचा सकता है, उसका एक सफल उदाहरण बन गया है, श्री देवीलाल सैनी जो कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के बाद विभिन्न गतिविधियों, प्रशिक्षण, नवीनतम तकनीकियों को सीखकर अपने आस–पास के गाँवों में कृत्रिम गर्भाधान से लेकर विभिन्न बीमारियों का सफलतापूर्वक उपचार कर इसे अपनी आजीविका का माध्यम बनाया है।

चक 23 एन. टी. आर, नोहर (हनुमानगढ़) से संबंध रखने वाले युवा किसान ने बताया कि शुरूआती दौर में उसे संघर्ष का सामना करना पड़ा लेकिन निरंतर कृषि विज्ञान केन्द्र एवं राजूवास के अन्य वैज्ञानिकों से संपर्क, लैब परीक्षण, अत्याधुनिक तकनीकं एवं महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के बाद उसका रोजगार इतना सफल हो गया कि उसे सरकारी पशुधन सहायक से भी ज्यादा तवज्जों दी जाने लगी है। उसकी मासिक आय रू 6000–7000 हो गयी है जिससे वह अपना गुजर – बसर आराम से कर रहा है। साथ ही युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बना हुआ है।

निदेशक की कलम से.....

भारत जैसे कृषि प्रधान देश की अर्थ व्यवस्था में पशुधन एवं पशुपालक का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि और पशुपालन व्यवसाय से करोड़ों परिवार अपना गुजर बसर करते हैं। पशुधन संपदा पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी विरासत है। इसका सवंर्द्धन और विकास हमारी जिम्मेदारी है। विज्ञान और शिक्षा के विस्तार से पशुपालन के तौर तरीकों में भी बदलाव आ रहा है। समय और कालखंड के अनुरूप चलने वाला ही प्रगतिशील कहलाता है। पशु चिकित्सा के क्षेत्र में भी अनुसंधान और तकनीकी विकास ने हमारी पुरानी मान्यताओं को बदल कर नया दृष्टिकोण दिया है। पशुपालन भी इससे अछूता नहीं है। यह हजारों लाखों परिवारों की जीवन रेखा है। बेरोजगारी के युग में पशुपालन ही एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ आशा की किरण दिखाई दे रही हैं। जरूरत है इसके महत्व को समझकर अपनाने की । दुग्ध व्यवसाय, मुर्गी पालन, मछली पालन, भेड़, बकरी, खरगोश पालन जैसे सैकड़ों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष व्यवसाय इससे जुड़े हुए हैं। राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय को भी अपनी जिम्मेदारी का अहसास है। इसी को मद्धेनजर रखते हुए पशु चिकित्सकों एवं पशु वैज्ञानिकों द्वारा किये गये नवीनतम शोध निष्कर्षों को राज्य के दूरदराज में बैठे पशुपालकों एवं जन जन तक पहुंचाने में इस पत्रिका का विशेष योगदान होगा।

पशुपालक एवं कृषक पारम्परिक पशुपालन पद्वति की जगह नवीन आधुनिक पशुपालन पद्धति अपनाकर कैसे अपने व्यवसाय को और अधिक सुदृढ़ तथा आगे बढाया जा सकें इस हेतु आप सभी का सहयोग अपेक्षित हैं। मासिक पत्र पशुपालन नए आयाम इसी दिशा में एक कदम है। इसके माध्यम से उपयोगी जानकारी मुहैया करवाई जा सकेगी। मेरा मानना है कि यह पत्रिका आपके और हमारे बीच एक संवाद सेतु का काम करेगी। मैं आशा करता हूँ कि यह मासिक पत्रिका राज्य के पशुपालकों, कृषकों एवं सम्पूर्ण ग्रामीण जनों के लिए लाभकारी साबित होगी तथा राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजुवास) बीकानेर का समगतिशीलता की दिशा में एक अग्रणी कदम होगा।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ.) चन्देश कुमार मुरड़िया
प्रसार शिक्षा निदेशक

नवाचार – समाचार भेज सकते हैं

पशुपालक भाईयों एवं पशुचिकित्सा व्यवसाय से जुड़े बंधुओं से अनुरोध है कि पशुपालन के क्षेत्र में कोई नवाचार – समाचार हो तो फोटोग्राफ सहित भिजवा सकते हैं। उपयुक्त पाए जाने पर प्रकाशित किया जाएगा

प्रधान संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
●
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
●
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
●
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505

भारत सरकार की सेवार्थ बुक पोस्ट

सेवामें

.....

.....

.....

संपादक, प्रकाशक और मुद्रक सी. के. मुरड़िया के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर से प्रकाशित और डायमंड प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनरी नत्थूसर गेट बीकानेर से मुद्रित